एपिसोड - 10

पात्र

लीला
मनोज
पृथ्वी
शकील
लक्ष्मी
मालिक

लीला - मध्य वय महिला
मनोज - मध्य वय पुरुष
पृथ्वी - कारोबारी , उम्र में दोनों से छोटा
शकील - ड्राइवर , आयु लगभग 30 वर्ष
लक्ष्मी - चाय वाली , आयु लगभग 30 वर्ष
अन्य - पेट्रोल पम्प पर खड़े लोग

(पेट्रोल पम्प पर कारों की लम्बी क़तार लगे हुए लोगों की बेचैनी ग़ुस्से मे बदल जाती हैं)

आवाज़-1 :- अरे भई , डीज़ल के लिए कब से लगे हैं लाइन में -!
लीला :- शकील , ज़रा देखो तो - डीज़ल देने में देर क्यों लग रही है ?
आवाज़-२;- लो जी ! वो तो डीज़ल देने से मना कर रहा है !
शकील - मना कर रहा है ?
आवाज़-२;- कहता है - खत्म हो गया , एक घण्टे बाद मिलेगा डीज़ल !
मनोज (तैश में):-
ऐसे कैसे ?? मैं देखता हूँ उसे ! (ग़ुस्से से) क्यों जी , डीज़ल क्यों नहीं दे रहे हो ?
मालिक :- अरे साब ! कब से तो कह रहा हूँ - डीज़ल खत्म हो गया है !!
मनोज :- ऐसे कैसे खत्म हो गया जी ?
पृथ्वी :- मज़ाक है क्या !!
मालिक:- ओहो ! आप लोग समझते क्यों नहीं ...!! घण्टे भर से पहले नहीं आएगा डीज़ल ! आएगा , तभी तो ….!
आवाज़ें :- हम सब समझते हैं -हमें मना करेगा - दूसरों को ब्लैक में बेचेगा !
मालिक :- ये क्या कह रहे हो ?
आवाज़ें:- अरे ये ऐसे नहीं मानेगा ! (चिल्ला कर) डीज़ल देता है या नहीं ??
लीला:- क्या पम्प का मालिक सही कह रहा है ? वाक़ई डीज़ल नहीं है उसके पास ?
मनोज:- लेकिन मेरी कार में तो डीज़ल है ही नहीं - आगे 30 किलोमीटर कैसे जाऊंगा ?
पृथ्वी :- वोई तो ! मेरी कार में भी मुश्किल से 2 -3 किलोमीटर लायक़ फ्यूल बचा है !
लीला:- आप लोग ज़रा शांति से काम लीजिए ना ! यहां मामला बिगड़ता लग रहा है ! लोग पम्प मालिक के साथ मारपीट पर उतारू हैं !
मनोज:- अच्छा है -पिटने दो - वो है भी इसी लायक़ !

लीला:- ये क्या कह रहे हैं आप ! आखिर हम ज़िम्मेदार नागरिक हैं ! भला हिंसा से कोई समस्या सुलझती है क्या ?

मनोज:- लेकिन उसे भी तो देखिये ! हमारी परेशानियों से जैसे कोई मतलब ही नहीं उसे ! और अगले 5 किलोमीटर तक कोई पेट्रोल पम्प भी नहीं है !

पृथ्वी:- और क्या !! मैं तो इस क़दर परेशान हूँ कि बता नहीं सकता ..!

लीला:- जेंटलमैन ! मैं एक सुझाव दूँ ? क्यूँ ना आप सब अपनी अपनी कार ड्राइवर के पास छोड़कर मेरी गाड़ी में चलें ? बाई द वे - मेरा नाम लीला है !

मनोज:- मैं-मनोज ! लेकिन हम आपके साथ क्यों जाएँ ? मतलब, हमारे लिए आप क्यों तकलीफ करें ?

पृथ्वी:- मैं - पृथ्वी ! मैं समझा नहीं ! अगर हमें अलग अलग जगह जाना हो .तो .!

लीला:- आपकी बात सही है , लेकिन इस वक़्त जो हालात हैं उनमें किया भी क्या जा सकता है ? पम्प वाला कह रहा है - उसके पास डीज़ल आते आते कम से कम एक घण्टा तो लग ही जाएगा ! इतनी देर तक इंतज़ार कैसे करेंगे आप लोग ? और रही मेरी परेशानी की बात , तो फिलहाल उसे भूल जाइये ! किसी दिन मुझे लिफ्ट देकर हिसाब बराबर कर सकते हैं !

पृथ्वी:- अ...हाँ ! ठीक है, लेकिन मुझे सेक्टर 18 पहुंचना है -वो भी एक घण्टे के अंदर ..!

मनोज:- और मेरी सेक्टर 7 में मीटिंग है !

लीला:- अरे वाह ! ये तो बहुत अच्छा है -लगता है मैं बिना अपना रास्ता बदले आप दोनों को ड्राप कर सकती हूँ ! तो इंतज़ार किस बात का ? अपने अपने ड्राइवर्स को बोल कर आ जाइये मेरी कार में ! आपकी अलग अलग जगहों पर ड्राप करने लायक़ फ्यूल है मेरे पास- मैं तो सिर्फ अपना रिज़र्व बढ़ाने के लिए क्यू में लग गई थी !

मनोज:- अ ...एक मिनिट में आया !

पृथ्वी:- मैं भी ..!!

लीला(खुद से):- कितनी अजीब बात है - किसी भी समस्या के आसान हल को हम अक्सर अनदेखा कर जाते हैं -पता नहीं क्यों ?

(कार स्टार्ट होकर चल पड़ती है)

मनोज:- गर्मी बहुत तेज़ है आज !! है ना ?

लीला:- क्या एसी चलाऊं ?

मनोज:- प्लीज़ ! मैं तो पसीना पसीना हुआ जा रहा हूँ !

पृथ्वी:- हमारे मौसमों को जाने क्या हो गया है ! सर्दी पूरी तरह बीती भी नहीं कि मौसम इतना तपने लगा !

लीला:- सही है ! लेकिन वैज्ञानिक इसके लिए हमें दोषी ठहराते हैं !

पृथ्वी :- क्या ? हमें - हिन्दोस्तानीयों को दोषी बताते हैं ? किस क़दर चालाक हैं ये पश्चिम के साइंटिस्ट ! हमें बदनाम करने का कोई मौक़ा नहीं छोड़ते ! अब आप ही बताइये मैडम - आखिर हमने मौसम को नुकसान पहुँचाने वाला ऐसा कौन सा काम क्या कर डाला ? अयं !!

मनोज :- शांत - पृथ्वी जी , शांत ! मैडम शायद ग्लोबल वार्मिंग की बात कर रहीं हैं ! साइंटिस्ट तो इसके लिए सिर्फ हिन्दोस्तानियों को नहीं , बल्कि सारी दुनिया को दोषी ठहरा रहे हैं –

लीला :- जी ! और उनमें हिन्दोस्तानी साइंटिस्ट भी शामिल हैं !

मनोज :- जीहाँ ! और ज़्यादातर मौसम वैज्ञानिक की राय में इस ग्लोबल वार्मिंग की वजह इंसानों द्वारा बढ़ाया जाने वाला ग्रीन हाउस इफ़ेक्ट है !

लीला :- दरअसल धरती पर प्राकृतिक ग्रीन हाउस में बदलाव की वजह इंसानी गतिविधियां ही हैं ! पिछले सौ सालों में कोयला और आयल जैसे फॉसिल फ्यूल जला जलाकर हमने वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड का जमाव बहुत ज़्यादा बढा दिया है

मनोज :- कोयला हो या आयल - इनके जलने से हवा में मौजूद कार्बन ऑक्सिजन के साथ मिलकर कार्बन डाई ऑक्साइड बना देती है !

लीला :- खेती उद्योग और हमारी दूसरी गतिविधियों की वजह से भी ग्रीन हाउस गैसेस का जमाव बढ़ा है !

पृथ्वी ;- क्या आप दोनों इंजीनियर हैं ?.. या .. मेरा मतलब . साइंटिस्ट. हैं ?

लीला :- बिलकुल नहीं ! मैं एक एन.जी ओ चलाती हूँ जो सड़क पर गुज़ारा करने वाले बच्चों की तकलीफें दूर करने की कोशिश करता है !

मनोज ;- मैं स्टॉक ब्रोकर हूँ ! लेकिन आपको ये क्यों लगा की हम इंजीनियर या साइंटिस्ट हैं ?

पृथ्वी ;- पता नहीं क्यों ..मतलब ..मैंने सोचा , जब आप लोगों को इन बातों की इतनी जानकारी है तो - ज़रूर ही आप लोग ..?

लीला :- इंजीनियर्स--हा हा !! पृथ्वीजी, लगता है आप हमारी रूखी बातों से बोर हो रहे हैं !

पृथ्वी ;- नहीं नहीं - ऐसा नहीं - पर ..!

लीला :- चलिए . कुछ और करते हैं -गाने सुनना पसन्द है आपको ? अ .. शायद कुछ पुराने गीत अच्छे लगते हों .! .शकील ! ज़रा वो गाना तो लगाओ - पाकीज़ा का - वही जो मैंने पिछले हफ्ते लोड किया था !

(कुछ देर गाना चलता है -प्रोड्यूसर अपनी पसन्द के मुताबिक़ गाना बदल भी सकते हैं)

शकील (खीझ कर):-

ये लोग ..(ब्रेक लगने पर कार झटके से रुकती है)- ये नालायक़ लोग कभी सुधरेंगे नहीं ! हमेशा कोई ना कोई झंझट खड़ी करते रहते हैं !

पृथ्वी :- क्या हुआ ?

शकील :- देखिये ! पूरी सड़क पर टूटे कांच बिखरे पड़े हैं ! एक सेकण्ड को भी चूक जाता तो पंचर हो जाते मेरे टायर !

लीला :- तुमने हमें बचा लिया शकील !

शकील :- रुकिए ..मुझे कार वापस पीछे लेकर , उस तरफ से घुमाकार लाना पड़ेगा !!

मनोज :- मैं सोच रहा हूँ , अगर कुछ हफ्तों पहले ऐसा हुआ होता तो क्या हालत होती !

पृथ्वी :- ऐसा क्यों कह रहे हैं ? ऐसी क्या बात थी पिछले कुछ हफ्तों पहले ?

शकील :- समझ गया सर - आप कोहरे की बात कर रहे हैं ना ?

मनोज :- बिलकुल सही ! दस बजे सुबह भी कुछ दिखाई नहीं पड़ता था इस सड़क पर ! सभी को उन मुश्किल हालात से गुज़रना पड़ा होगा !

पृथ्वी :- सही है ! अब तो हर जाड़े के मौसम में ये एक आम बात ही हो गयी है !

लीला(हंसते हुए):-

मुझे फिर उसी टॉपिक पर लौटना पड़ेगा पृथ्वीजी !- इन पूरे हालात के लिए हम ही ज़िम्मेदार हैं !

पृथ्वी :- आपका मतलब -फॉसिल फ्यूल जलाने से है ?

लीला:- बिलकुल वही ! ज़रा हमारी राजधानी - दिल्ली के बारे में सोचिये ! जब कोहरा घना हो जाता है और हटने का नाम ही नहीं लेता तब यहां के लोग कितनी बुरी तरह परेशान होते हैं !

मनोज :- स्कूल बन्द - हर तरफ ट्रेफिक जैम !..ज़िन्दगी जैसे थम कर रह जाती है !

पृथ्वी :- लेकिन कहते हैं इस मर्तबा दीवाली पर पटाखे चलाने की वजह से ये मुसीबत खड़ी हुई !

लीला :- वो बात बिलकुल सही है लेकिन असली गुनाहगार तो कोयला,डीज़ल पेट्रोल सरीखे फॉसिल फ्यूल ही है !

शकील :- मैडम ! मुझे याद है - दिल्ली के ही एक डॉक्टर ने बताया था - इस दिल्ली शहर की हवा में रोज़ाना दस सिगरेट धौंकने बराबर धुआं मौजूद रहता है ! यानि बीड़ी सिगरेट छोड़ने पर भी बचना मुश्किल !!

मनोज :- 2002 से 2012 तक गाड़ियों की तादाद 97 % बढ़ी है जिसकी वजह से प्रदूषण में तो भारी इज़ाफ़ा हुआ ही है ,साथ ही साथ ज़हरीले धुंए का भी सीधा सामना करना पड़ता है ! कोहरा तो सिर्फ वो असर है जो हमें नज़र आजाता है !

पृथ्वी :- लेकिन हम कर भी क्या सकते हैं ? अगर हमें तरक़्क़ी करनी है तो फिर ज़्यादा कारों की भी दरकार होगी !

लीला :- ये ज़रूरी नहीं !! हाँ , जहां तक कुछ अच्छा करने की बात है - तो कहा जा सकता हैं - वो हम , अभी - इस वक़्त , कर ही रहे हैं !

मनोज :- मैं समझा नहीं ...!

लीला :- इस वक़्त हम लोग बजाए तीन तीन कारों के एक ही कार में सफर कर रहे हैं ! इसीको शेयरिंग कहते हैं !
और यक़ीनन प्रदूषण का स्तर घटाने में ये सहायक साबित होगा ! इसके अलावा ,ये संधारणीय या टिकाऊ ज़िन्दगी जीने का भी एक तरीक़ा है !

पृथ्वी :- मानता हूँ , लेकिन हममें से ज़्यादातर लोग अपनी खुद की कार ही पसन्द करते हैं - उन्हें शेयरिंग नहीं जमती !

लीला :- मैं ये नहीं कह रही कि सबके पास अपनी अपनी कार ना हो ! लेकिन शेयरिंग के पीछे यही भावना है कि किसी दिन सभी गाड़ियां एक साथ सड़कों पर नहीं होंगी बल्कि एक ही कार में दो या तीन मुसाफिर होंगे ! गाड़ियों का इस्तेमाल बारी बारी से किया जा सकता है ! आज मेरी कार - कल आपकी - और अगले दिन मनोज जी की कार -इसी तरह चलता रहेगा !

मनोज :- मैं आपकी बात से सहमत हूँ ! इस तरह हम फ्यूल की काफी बचत कर सकते हैं ! अ...क्या आपकी कारहाइब्रिड है ?

लीला :- अगर आपका मतलब डीज़ल सोर्स प्लस इलेक्ट्रिसिटी है - तो नहीं - ये हाइब्रिड नहीं है !

पृथ्वी :- कुछ ही दिनों पहले मैंने हाइब्रिड कार के बारे में पढ़ा ! लिटरेचर में बताया है कि कम स्पीड पर एन्जिन बन्द करके कार को सिर्फ इलेक्ट्रिक मोटर से चलाया जा सकता है ! फिर, जब अधिकतम गति ज़रूरी हो तो दोनों एक साथ काम करते हैं ! बीच बीच में एन्जिन से पैदा होने वाली अधिक पॉवर इलेक्ट्रिक मोटर को पॉवर देने वाली बैटरीज़ रिचार्ज करने में इस्तेमाल हो जाती है ! बैटरी काफी बड़ी होती है जिससे इलेक्ट्रिक मोटर कार को 1.2 5 मील तक चला सकती है !

लीला :- हाँ - ये मैंने भी पढ़ा है ! बहुत मंहंगा मॉडल है !

मनोज :- आप सही कह रहीं हैं ! इस क़िस्म के कार मॉडल्स बहुत मंहंगे होते हैं ! बहुत कम लोग अफ़्फोर्ड कर सकते हैं !

लीला :- मेरी कार में में बड़ा सरल सा कॉम्बिनेशन है - पेट्रोल और गैस - CNG !

पृथ्वी :- मुझे पक्का तो पता नहीं है लेकिन कोम्प्रेस्ड नेचुरल गैस .मतलब CNG भी फॉसिल फ्यूल है ! तो क्या उससे प्रदूषण नहीं होगा ?

मनोज :- पृथ्वीजी - शायद आपने CNG पर हुई सारी बातें सुनी ही नहीं ! इस समय यातायात के वास्ते बाजार में उपलब्ध ये सबसे साफ़ सुथरा फ्यूल है ! पेट्रोलियम आधारित उत्पादों के मुक़ाबले CNG अपने कम कार्बन कंटेंट के कारण ज़्यादा शुद्धता के साथ जलता है ! CNG से होने वाले उत्सर्जन की मात्रा भी काफी कम होती है ! इसमें पेट्रोल के मुक़ाबले प्रदूषण कारी तत्व बहुत कम होते हैं !

लीला :- लेकिन पृथ्वीजी का कहना भी सही है ! 2010 में सेंट्रल पॉल्यूशन बोर्ड ने 7 % के लिए CNG से चलने वाले वाहनों को ज़िम्मेदार ठहराया था ! स्टडी के मुताबिक़ CNG चालित गाड़ियों की राजधानी के कुल नाइट्रोजन डाइऑक्साइड भार में 10 % की हिस्सेदारी पाई गयी थी !

पृथ्वी (फोन की घण्टी बजने पर , बात करता है):-

हाँ ..ठीक है ..लेकिन ..लेकिन क्यों ..नहीं नहीं , हम इस मामले में कुछ नहीं कर सकते .वो हम देखेंगे ! बाई ! ! (फोन बन्द करता है)- सॉरी ! ऑफिस से फोन था ! मेरी एक्सपोर्ट एजेंसी है !

मनोज :- कोई खास बात ?

पृथ्वी :- सेक्रेटरी ने बताया हमारे क्लाइंट ने आज की मीटिंग कैंसेल कर दी है . तो अब मुझे (हंसते हुए) टाइम प्रेशर नहीं है !

लीला (हंस कर):-

तो इसका क्या अर्थ समझ जाये ? शकील को गाड़ी धीरे चलाने कहूँ .या सड़क किनारे किसी गुमठी पर रुक कर चाय पी ली जाये ?

मनोज :- चाय ? अभी ?

लीला :- मैं आपको फ़ोर्स नहीं करूँगी - लेकिन एक तो पृथ्वीजी के पास टाइम है और फिर हमारी आज की सामूहिक यात्रा सेलिब्रेट करने में भी कोई बुराई नहीं है !.तो अगर आप 10 मिनट दे सकें तो बढ़िया टी पार्टी हो जाए ! क्या ख्याल है ? (सब हंसते हैं)

मनोज :- हम्म ..कोई बात नहीं ! ऑफिस को मेसेज किये देता हूँ कि 10 मिनट देर हो जाएगी - लीला मैडम की मेहरबानी से !!(हंसता है)

लीला :- तो ठीक है - शकील ! हम लोगों के लिए कोई अच्छा सा टी स्टाल देखो !

शकील :- आगे 500 मीटर पर एक स्टाल है !

(कार तेज़ी से आगे बढ़ती है -कुछ सेकण्ड्स चलती कार की आवाज़ जारी रहती है -फिर बन्द हो जाती है ! दरवाज़े खुलने और बन्द होने की आवाज़ें)

शकील :- ऐ बहिनजी ! हमारे लिए चाय बनाइये ! आइये मैडम - आइये सर ,आइये ! बैठने की जगह है !

लक्ष्मी :- हाँ जी - दो मिनट ! चूल्हा बस अभी जलाया है -बैठिये - आपको गर्मागरम चाय पिलाती हूँ !

मनोज :- चूल्हा जलाने का एलान करने की क्या ज़रूरत थी - धुंआं वैसे ही सब कुछ बता रहा है !!

लीला :- उफ़ ! क्या मुसीबत है ! सुनो -- क्या नाम है तुम्हारा ?

लक्ष्मी :- लक्ष्मी ! मेरा नाम लक्ष्मी है मैडम !

लीला :- अच्छा लक्ष्मी- इस धुंए का कुछ कर सकती हो ? इतने धुंए में तो तुम्हारी चाय का मज़ा नहीं उठा पाएंगे हम !

लक्ष्मी :- नाराज़ मत होइए मैडम ! धुआं अभी छंटा जाता है ! अरे बबलू ! कुर्सियां उस तरफ लगा ..मैडम , आप उधर बैठिये – वहां धुआं नहीं लगेगा !

पृथ्वी :- कोयला ! सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाला फॉसिल फ्यूल ! चांदनी चोक से लेकर चाइना तक हर जगह यही हाल है लीलाजी ,!

शकील :- सर , आपने चाइना का ज़िकर किया है तो ..हाल ही में मेरे एक चचेरे भाई की नौकरी बीजिंग में लगी है ! उसने अपनी माँ को खत में लिखा है कि यहां धुंए के मारे दम घुटा जाता है ! रोज़ सवेरे लोग मुंह पर मास्क लगा कर निकलते हैं ! ड्राइविंग भी मुश्किल है !

लीला :- चाइना में तो कोयला क़रीब 40 % उस जानलेवा बारीक मैटर के लिए ज़िम्मेदार है जिसे PM कहा जाता है ! वहां के वातावरण में इसे PM 2 .5 आँका गया है !

शकील :- PM क्या होता है मैडम ?

लीला :- PM के मायने हैं पर्टिकुलर मैटर ! वो बहुत ही बारीक बारीक से कण जो तेज़ी से गुज़रती कारें अक्सर पीछे छोड़ जातीं हैं ! . अच्छा. शकील ! सुनो ! ..कार को किसी छायादार जगह पर खड़ा करलो.वरना तप जाएगी - हमें ज़्यादा AC चलना पड़ेगा !

शकील :- अभी किये देता हूँ मैडम !

मनोज :- हमारी AC मशीनें हों या बिजली के उपकरण या बिजली से चलनेवाली कोई भी चीज़ - लौट कर हमें कोयले पर ही आना पड़ता है ! वैकल्पिक ऊर्जा को लेकर छिड़ी सारी बहस और शोर शराबे के बावजूद हम बड़ी हद तक कोयले पर ही निर्भर हैं !

पृथ्वी :- मेरी सेक्रेटरी हर रोज़ अपना अख़बार बड़े ग़ौर से पढ़ती है ! वो हमेशा इंटरनेशनल मुद्दों को लेकर खासी उत्साहित रहती है ! मुझे एक दिन चाइना में कोयले के इस्तेमाल को लेकर कुछ आंकड़े बता रही थी !

मनोज :- क्या आंकड़े ? हमें भी बताइये ना !

पृथ्वी :- ठीक है ! वो बता रही थी कि चाइना में हर बरस कोयले की जितनी खपत होती है उतनी खपत तो दूसरे सारे देशों में कुल मिलाकर भी नहीं होती ! कोयला जलाना वहां प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैस पैदा होने की सबसे बड़ी वजह है !

लीला :- लेकिन मैंने न्यूयॉर्क टाइम्स में पढ़ा है कि चाइना में कोयले के उपभोग में अब कमी आने लगी है ! चलिए , हम उम्मीद करें कि वैकल्पिक ऊर्जा बड़े पैमाने पर कोयले और पेट्रोल की जगह जल्द ही ले लेगी !

मनोज :- इस मामले मेंचाइना की बड़ी विचित्र स्थिति है ! एक तरफ तो फोटोवोल्टाइक पेनल्स के ज़रिये सौर ऊर्जा पैदा करने वाले देशों की सूची में वो सबसे ऊपर है ! दूसरी तरफ भारी पैमाने पर कोयला जलाते हुए दुनिया का सबसे बड़ा प्रदूषण फैलाने वाला देश बना हुआ है !

लक्ष्मी :- लो साब - गरमागरम चाय !!

लीला :- हूँ ...! खुशबू से लगता है , अदरक डाला है इसमें !! शुरू में तो धुंए ने मूड ही खराब कर दिया था !

मनोज :- लक्ष्मी , तुम केरोसिन क्यों नहीं इस्तेमाल करतीं ?

लक्ष्मी :- कोशिश की थी सर ..लेकिन केरोसिन आसानी से नहीं मिलता ..हमारे पास राशन कार्ड नहीं है , और राशन की दुकान के अलावा कहीं और से केरोसिन लें तो बहोत महँगा पड़ता है !

लीला:- लेकिन कोयले के लिए भी तो तुम्हे दाम चुकाने पड़ते होंगे? फिर, वो कैसे करती हो ?

लक्ष्मी:- अब वो तो कैसे भी कर लेते हैं मैडम ! ....अच्छा , मुझे काम है ...कप बाद में आकर ले जाउंगी ! आप आराम से चाय पियो !

पृथ्वी:- देखा , वो आपका सवाल कैसे टाल गयी ! अक्सर ग़रीब लोग कोयले के टुकड़े रेल यार्ड से उठा लाते हैं या उन जगहों से जहां वो बेचने के लिए रखा जाता है !

लीला:- मुझे पता है ! वो लोग कोयला चुराते हैं , और अक्सर अपने बच्चों को इस काम पर लगा देते हैं ! हमने कई बार ये मुद्दा अपने प्रोजेक्ट्स में उठाया है !

पृथ्वी:- ईंधन के बिना तो काम चल ही नहीं सकता लीला जी ! दिन ब दिन इसके बढ़ते खर्च की वजह से घर का बजट भी भारी होता जा रहा है !

मनोज:- और लक्ष्मी जैसे ग़रीबों को जैसे भी बन पड़े , वो जुटाना पड़ता है !

लीला:- लेकिन मनोज जी , आपने कोयले के बदले केरोसिन इस्तेमाल करने की सलाह दी , जबकि पर्यावरण के लिए वो भी कम खतरनाक नहीं है! ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने में उसकी भी खासी हिस्सेदारी है !

मनोज:- जानता हूँ ,जानता हूँ ! लेकिन किया भी क्या जा सकता है ? बिजली जिनकी पहुंच से बाहर है- दुनिया के उन बीस प्रतिशत लोगों के लिए केरोसीन की लालटेनों से मिलने वाली रौशनी बहुत ज़्यादा मायने रखती है ! दरअसल पिछली रिपोर्ट्स के मुताबिक़ 77 बिलियन लीटर लिक्विड फ्यूल , ज़्यादातर केरोसिन , हर साल उन घरों में रौशनी के लिए इस्तेमाल होता है जहां बिजली नहीं है !

लीला:- फिर भी कुछ आशाजनक काम हो रहे हैं ! सुना है जल्द ही पूरा गुड़गांव केरोसीन की जगह एलपीजी का इस्तेमाल शुरू कर देगा ! प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना के अंतर्गत गैस कनेकशन दिए जा रहे हैं !

पृथ्वी:- अच्छा ! ये तो बड़ी अच्छी खबर है ! असल में इस तरह की खबरें अक्सर क्रिकेट और पोलिटिकल खबरों के शोर शराबे में दब कर रह जातीं हैं !

लक्ष्मी :- चाय ठीक थी मैडम ?

लीला :- बढ़िया ! सबको मज़ा आया !

मनोज:- पैसे मैं दिए देता हूँ !

लीला:- बिलकुल नहीं ! (पुकार कर) शकील ! चाय पी ली हो तो कार ले आओ !

शकील:- आया मैडम !

पृथ्वी:- हाँ अब हमें जल्दी करना चाहिए ! (कार क़रीब आती है - दरवाज़े खुलने और बन्द होने की आवाज़ों के साथ कार चल पड़ती है)

मनोज:- वो कौन सा पेपर है लीलाजी ?

लीला:- ओह ये ? किसी लोकल अख़बार का पुराना इशू है !

मनोज:- ज़रा मुझे दीजिये ! पिछले पन्ने की हेडलाइन ..दिलचस्प मालूम होती है !

लीला:- लीजिये ! ओह , फिर कोहासा !! यूरोपियन स्टोरी !

मनोज:- हम्मम .. इसमें लिखा है ..ब्रिटिश और फ्रेंच राजधानियां इस हफ्ते वायु प्रदूषण के खतरनाक स्तर से जूझ रहीं हैं ! जाड़ों में स्मॉग ज़्यादा बढ़ जाता है ! पेरिस के मेयर डीज़ल कारों पर रोक लगाना चाहते हैं !

पृथ्वी:- ये दिसम्बर की बात है ना ? मुझे याद आ रहा है कि पेरिस में भी ऑड और ईवन नम्बर कारों का तजुर्बा होने लगा था ताकि सड़कों पर गाड़ियों की भीड़ में कमी हो ! जैसे अपनी दिल्ली में !

लीला:- ऐसे कोहरे के लिए लन्दन भी खासा बदनाम है ! 1952 का ग्रेट फॉग भला कौन भूल सकता है ?

पृथ्वी:- क्या हुआ था 1952 में ? बताइये ना !

लीला:- सर्दियों का मौसम था ! साथ साथ हवाएं भी थमी हुईं थीं ! हवा में प्रदूषणकारी तत्व जमा होने लगे , खास तौर पर कोयला जलाने से पैदा होने वाले प्रदूषकतत्व ! जैसे पूरे शहर पर धुंध की मोटी चादर सी तन गयी थी !

मनोज:- हाँ , और ये हालात पूरे पाँच हफ्तों तक क़ायम रहे ! बाद में मौसम बदलने पर ही वो धुंध छँटी !

पृथ्वी:- इन दिनों तो लन्दन की हालत ठीक है ना ?

मनोज:- इस टेब्लॉइड के अनुसार तो लन्दन के मेयर ने वायु प्रदूषण का अलर्ट जारी कर दिया है ! कार वालों से भी अनुरोध किया है कि अपनी अपनी गाड़ियां घर पर ही रहने दें !!

पृथ्वी:- ज़रा मैं भी पढ़ूं ! हू ..लिखा है अधिकतर प्रदूषण कारों की वजह से , खासतौर पर डीज़ल कारों की वजह से फैला जिनके एग्जॉस्ट 95 फीसदी नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड उगलते हैं ! इसीलिये मेयर हिडैल्गो ने आदेश दिया है कि आज पेरिस की सड़कों से आधी गाड़ियां हटा ली जाएँ !

मनोज :- अब ज़रा ये भी सुनिये - इस हालत के लिए भी ब्रिटिश अख़बार फ़्रांस की तरफ से आने वाली प्रदूषित हवा को ज़िम्मेदार ठहरा रहे हैं !

लीला:- हा हा ! एक दूसरे पर दोषारोपण का ये ब्रिटिश -फ्रेंच खेल हमेशा चलता रहता है !

पृथ्वी:- लेकिन ये धुंध या कुहासा आखिर होता कैसे है ?

लीला:- साइंस के मुताबिक़ , सूरज की रौशनी ,नाइट्रोजन ऑक्साइड और वायुमण्डल में मौजूद किन्ही ऑर्गेनिक कमपाउंडस या जैविक मिश्रणों के केमिकल रिएक्शन से पैदा होने वाले कणों और निचली सतह पर पाई जानेवाली ओज़ोन से स्मॉग बनता है !

पृथ्वी:- ओज़ोन ? मैंने सुना है , वायुमण्डल में ओज़ोन भारी मात्रा में मौजूद है ..और वो हमें सूरज से आनेवाली हानिकारक किरणों से बचाती है ! क्या वो निचली सतह पर भी होती है ? इंटरेस्टिंग !!

मनोज:- हाँ ये वाक़ई इंटरेस्टिंग बात है ! निचली सतह वाली ओज़ोन रंगहीन होती है -और बहुत ही परेशान करने वाली ऐसी गैस है जो धरती की सतह से कुछ ही ऊपर होती है ! इसे सेकंडरी पोल्युटेन्ट कहा जाता है क्योंकि ये तब बनती है जब दो प्राइमरी पोल्युटेन्ट सूर्य की रौशनी और ठहरी हुई हवा में प्रतिक्रिया करते हैं !

लीला:- प्राइमरी पोल्युटेन्ट , मतलब - नाइट्रोजन ऑक्साइड और कुछ हवा में उड़नेवाले ऑर्गेनिक कमपाउंडस !

पृथ्वी:- यानी - फिर वही ! कारें ?

लीला(हंसते हुए):-

इतने टेन्स मत होइए पृथ्वीजी ! ये सही है कि इंसानी गतिविधियों से पैदा होनेवाली लगभग 95 फीसदी नाइट्रोजन ऑक्साइड कोयला जलाने , गैसोलीन और मोटर गाड़ियों , घरों ,उद्योगों और पॉवर प्लांट्स से निकलती है !

मनोज:- वोलाटाइल कमपाउंडस ज़्यादातर गैसोलीन जलने , अपस्ट्रीम आयल और गैस उत्पादन के अलावा द्रव ईंधन और घोलकों के वाष्पीकरण से बनते हैं !

पृथ्वी:- क्या ये ओज़ोन हानिकारक होती है ?

लीला:- और क्या ? ओजोन मानव स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव डालने के लिए जानी जाती है ! ओज़ोन के सम्पर्क में आने को समय से पहले मृत्यु , अस्थमा और अन्य कारणों से होनेवाली बीमारियों से जोड़ा जाता है !

मनोज:- ओज़ोन का वनस्पतियों पर विशेष असर होता है ! ये कई फसलों की पैदावार घटा देती है !

पृथ्वी:- ओहो ! अब जाएँ तो जाएँ कहाँ ? इसका मतलब तो ये हुआ कि गैसोलीन का वो हर लीटर जो हम जलाते हैं , वास्तव में हमारा स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला ही होता है !

शकील:- सर ! हम सेक्टर 18 में दाखिल हो रहे हैं ! .. आप कहाँ उतरना चाहेंगे ?

लीला:- अभी तो आपको अपने ऑफिस ही जाना होगा ना !

पृथ्वी:- हा हा ! सही कहा आपने ! लेकिन हमें चर्चा करने का अच्छा मौक़ा मिला , मनोज जी ! कम से कम मुझे तो बहुत फायदा हुआ !

मनोज:- फायदा मुझे भी हुआ ,पृथ्वीजी ! कितनी ही बातें मालूम हुईं ! हमें अपनी होस्ट लीलाजी का आभार मानना चाहिए !

हाँ हाँ , बिलकुल ! शकील भाई , ज़रा बाएं हाथ बढिये ! उस तरफ , वो हरी बिल्डिंग है ..अ..हाँ ! बस यहीं रोक दीजिये !

(कार रुकती है - दरवाज़ा खुलता है - पृथ्वी हरेक को बाय कहता है)

मनोज:- पृथ्वी जी ! आज का दिन हमें याद रहेगा ! और हाँ , अपनी समाचार प्रेमी सेक्रेटरी को हमारी इस चर्चा के बारे में बताना मत भूलियेगा ! (सब ठहाका लगाते हैं)

********************x******************-**